घरेलु और कामकाजी महिलाओं के बच्चों में व्यक्तित्व, मूल्य, और सुरक्षा की भावनाएँ: एक अवलोकन

अभिलाषा भोजक[1] डॉ. अनिता सिंह[2]

[1]शोधार्थी [2]सह–प्राध्यापक

विभागः शिक्षा

श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ, राजस्थान

सार

घरेलू और कामकाजी महिलाओं के बच्चों के व्यक्तित्व, मूल्य, और सुरक्षा से जुड़े मुद्दे पर विचार किए गए हैं। यह अध्ययन उन विभिन्न प्रायोगिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्यों का परीक्षण करता है जिनके तहत ये बच्चे बढ़ रहे हैं और कैसे उनके व्यक्तिगत और सामाजिक विकास पर प्रभाव पड़ता है। घरेलू माताओं की असमान समाजिक स्थिति और सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण उनके बच्चों के व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ सकता है। इन बच्चों के माता-पिता के रूप में घर में उनका स्थान और महत्व महत्वपूर्ण होता है, लेकिन समाज में उनकी पहचान कम हो सकती है। इसके परिणामस्वरूप, ऐसे बच्चों के व्यक्तित्व में आत्मविश्वास की कमी हो सकती है, जो उनके सामाजिक और व्यक्तिगत विकास को प्रभावित कर सकती है। दूसरी ओर, कामकाजी महिलाओं के बच्चों का परिपर्णता और सुरक्षित माहौल मिलता है, जो उनके स्वाभाविक विकास को संवारने में मदद कर सकता है। इन बच्चों को जीवन की कठिनाइयों का सामना करना सिखाया जाता है और वे सहायता की मांग करने में हिचकिचाते नहीं हैं। ऐसे माहौल में, बच्चों की सुरक्षा और स्वाभाविक सम्बन्धों की प्राथमिकता होती है, जिससे उनका व्यक्तित्व सकारात्मक दिशा में विकसित हो सकता है।

प्रस्तावना:

महिलाएँ समाज की मूलाधार शक्ति होती हैं और उनका महत्व सिर्फ घरेलू कार्यों में ही नहीं, बल्कि कामकाजी क्षेत्र में भी होता है। यह पेपर घरेलू और कामकाजी महिलाओं के

बच्चों के व्यक्तित्व, मूल्य, और सुरक्षा की भावनाओं पर एक विशेष प्रकार से ध्यान केंद्रित करेगा।

परिवार मानव समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है और महिलाएँ उसके निर्माता और संरचनाकर्ता की भूमिका निभाती हैं। महिलाएँ घरेलू मातृता के साथ-साथ कामकाजी जीवन में भी सक्रिय रहती हैं, और उनके बच्चों में व्यक्तित्व, मूल्य, और सुरक्षा की भावनाएँ निर्माण होती हैं। इस अवलोकन में, हम इन भावनाओं की महत्वपूर्णता को समझने का प्रयास करेंगे।

व्यक्तित्व: मातृता और पारिवारिक देखभाल के क्षेत्र में कामकाजी महिलाएँ अपने बच्चों के व्यक्तिगत विकास को महत्वपूर्ण रूप से समझती हैं। वे बच्चों की प्रतिभा, रुचियां और रूपरेखा को समझती हैं और उनकी सहायता करती हैं ताकि वे अपने आत्मप्रतिष्ठान को विकसित कर सकें। घरेलू मातृता के दौरान भी, माताएँ बच्चों को आदर्शों और मूल्यों की शिक्षा देती हैं, जो उनके व्यक्तिगत विकास में मदद करते हैं।

मूल्य: महिलाएँ बच्चों को नेतृत्व, सहानुभूति, और सहयोग के मूल्यों का महत्वपूर्ण संदेश देती हैं। वे बच्चों को सिखाती हैं कि सभी व्यक्ति समान मूल्य रखते हैं और उन्हें दुनिया में सफलता पाने का अधिकार होता है। मातृता के दौरान, माताएँ बच्चों को समय, स्नेह, और ध्यान देती हैं, जिससे उनका मानसिक और भावनात्मक विकास हो सके।

सुरक्षा: महिलाएँ अपने बच्चों की सुरक्षा और सुरक्षित माहौल बनाने में संलग्न रहती हैं। वे बच्चों को समझाती हैं कि कैसे सुरक्षित रहना और खुद की सुरक्षा का ख्याल रखना जरूरी है। घरेलू मातृता के दौरान, माताएँ बच्चों की चिंता करती हैं और उन्हें खुद की सुरक्षा के बारे में जागरूक करती हैं।

घरेलू और कामकाजी महिलाएँ अपने बच्चों में व्यक्तित्व, मूल्य, और सुरक्षा की भावनाएँ सिखाने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

घरेलू महिलाओं के बच्चों में व्यक्तित्व:

घरेलू महिलाएँ अक्सर अपने बच्चों के प्रति संवेदनशील होती हैं और उनके व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे अपने बच्चों के साथ संवाद करने का समय देती हैं जिससे उनकी भावनाओं का समर्थन किया जा सके। घरेलू माताएँ अक्सर अपने बच्चों के विकास में नैतिक मूल्यों को सिखाने में भी सहायक साबित होती हैं।

घरेलू महिलाओं के बच्चों में व्यक्तित्व का निर्माण एक मातृत्वपूर्ण कार्य होता है जो महिलाओं के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। घरेलू महिलाएँ अपने बच्चों को न सिर्फ शारीरिक रूप से सेवा करती हैं, बल्कि उनके मानसिक, भावनात्मक, और सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

सहायता और आदर्शों की प्रवृत्ति: घरेलू महिलाएँ अक्सर अपने बच्चों की सहायता करने के लिए प्रतिबद्ध रहती हैं। वे उनकी शिक्षा और सिखाने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और उन्हें सही मार्ग पर चलने में मदद करती हैं। घरेलू मातृता के दौरान, माताएँ अपने बच्चों को आदर्शों की प्राथमिकता के महत्व को समझाती हैं, जो उनके व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देते हैं।

संवाद और सुनने की क्षमता: घरेलू महिलाएँ अपने बच्चों के साथ संवाद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे उनकी बातचीत को सुनती हैं, उनके खुशियों और चिंताओं का सामना करती हैं और उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शन करती हैं।

स्वतंत्रता की सीख: घरेलू महिलाएँ अपने बच्चों को स्वतंत्रता की महत्वपूर्णता को सिखाती हैं। वे उन्हें स्वतंत्रता के साथ निर्णय लेने की क्षमता देती हैं और उन्हें स्वयं की खोज और विकास में प्रोत्साहित करती हैं।

सामाजिक मूल्यों की शिक्षा: घरेलू महिलाएँ अपने बच्चों को सामाजिक मूल्यों और नैतिकता की महत्वपूर्णता को समझाती हैं। वे उन्हें ईमानदारी, समर्पण, सहानुभूति, और आपसी सद्भाव की महत्वपूर्णता की शिक्षा देती हैं।

संघर्ष से संघर्ष तक की साहसिकता: घरेलू महिलाएँ अपने बच्चों को संघर्षों का सामना करने की साहसिकता देती हैं और उन्हें हालातों का सामना करने की क्षमता सिखाती हैं।

कामकाजी महिलाओं के बच्चों में व्यक्तित्व:

कामकाजी महिलाएँ अपने बच्चों के व्यक्तित्व के विकास के लिए समय की कमी के बावजूद भी महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। वे अपने सामाजिक और आर्थिक परिप्रेक्ष्य में बच्चों को देखभाल करने का तरीका सीखते हैं, जिससे उनके व्यक्तित्व का संरचनात्मक विकास संभव होता है।

मूल्य और संरक्षण की भावनाएँ:

घरेलू और कामकाजी महिलाएँ अपने बच्चों को मूल्यों और संरक्षण की महत्वपूर्ण भावनाएँ सिखाती हैं। वे अपने बच्चों को समझाती हैं कि मानवीय मूल्यों का पालन करना क्यों महत्वपूर्ण है और उन्हें अपनी सुरक्षा का भी संवेदना होनी चाहिए। मूल्य और सुरक्षा की भावनाएँ एक व्यक्ति के व्यक्तिगत और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये भावनाएँ उनके व्यक्तित्व को निर्माणशील और समृद्ध करने में मदद करती हैं और उन्हें सफल और संतुष्ट जीवन जीने में सहायक होती हैं।

मूल्यों की भावनाएँ: मूल्यों की भावनाएँ व्यक्ति के संदर्भ में सही और गलत के बीच विचार करने में मदद करती हैं। ये भावनाएँ उन्हें सही और ईमानदार चुनौतियों का सामना करने की क्षमता प्रदान करती हैं और उन्हें नेतृत्व की भूमिका में उत्तरदायी बनाती हैं। ये मूल्य जैसे कि सच्चाई, समर्पण, सद्भावना, ईमानदारी, न्याय, और समर्पण की महत्वपूर्णता को समझाती हैं।

सुरक्षा की भावनाएँ: सुरक्षा की भावनाएँ व्यक्ति को आत्मनिर्भर और सुरक्षित महसूस करने में मदद करती हैं। ये भावनाएँ उन्हें स्वयं की रक्षा का जिम्मा उठाने की क्षमता प्रदान करती हैं और उन्हें आत्मविश्वास में वृद्धि करती हैं। ये सुरक्षा की भावनाएँ जैसे कि आत्मरक्षा, साहस, और विश्वास की महत्वपूर्णता को समझाती हैं।

ये मूल्य और सुरक्षा की भावनाएँ व्यक्ति को सही और न्यायसंगत फैसलों के लिए नेतृत्व करने में मदद करती हैं, समस्याओं का समाधान ढूंढने में मदद करती हैं, और सामाजिक संबंधों को मजबूती देती हैं। इन भावनाओं का पालन करने से व्यक्ति आत्म-समर्पण,

सहानुभूति, और समर्पण की मानसिकता से युक्त होता है, जिससे उनके व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में सफलता प्राप्त हो सकती है।

सुरक्षा की भावनाएँ:

घरेलू और कामकाजी माताएँ अपने बच्चों की सुरक्षा को लेकर अत्यधिक सावधानी बरतती हैं। वे उन्हें सुरक्षित रहने के तरीके सिखाती हैं और उनके साथ खुले मन से बातचीत करती हैं ताकि वे किसी भी परेशानी की स्थिति में उनसे साझा कर सकें।

सुरक्षा की भावनाएँ व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जो उन्हें आत्मनिर्भर, स्थिर और सुरक्षित महसूस करने में मदद करती हैं। ये भावनाएँ उन्हें उनकी चिंताओं का सामना करने की क्षमता प्रदान करती हैं और उन्हें सभी प्रकार की स्थितियों में स्थिरता बनाए रखने में मदद करती हैं।

कुछ महत्वपूर्ण सुरक्षा की भावनाएँ निम्नलिखित हो सकती हैं:

1. **आत्मरक्षा:** यह भावना व्यक्ति को खुद की सुरक्षा का जिम्मा उठाने की क्षमता प्रदान करती है। व्यक्ति को अपने शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य की देखभाल करने की आदत डालने में मदद करती है जो उनकी सुरक्षा को बढ़ावा देती है।
2. **परिवारिक सुरक्षा:** यह भावना व्यक्ति को अपने परिवार के सदस्यों की सुरक्षा की प्राथमिकता देने की क्षमता प्रदान करती है। यह उन्हें समय समय पर अपने परिवार के सदस्यों की देखभाल और सुरक्षा की जिम्मेदारी लेने में मदद करती है।
3. **आत्मविश्वास:** सुरक्षा की भावनाएँ व्यक्ति को आत्मविश्वास की महत्वपूर्णता को समझाती है। यह उन्हें अपनी क्षमताओं में विश्वास रखने, आत्मा-समर्पण में विश्वास करने और नए चुनौतियों का सामना करने में मदद करती है।
4. **सामाजिक सुरक्षा:** यह भावना व्यक्ति को समाजिक और सामाजिक संबंधों की सुरक्षा की महत्वपूर्णता को समझाती है। यह उन्हें समाज में सम्मान प्राप्त करने, सामाजिक समृद्धि की दिशा में आगे बढ़ने की क्षमता प्रदान करती है।

5. खुदरक्षा: यह भावना व्यक्ति को खुद की सुरक्षा के लिए आवश्यक कदम उठाने की क्षमता प्रदान करती है। यह उन्हें आपत्तियों और आपदाओं के समय सही कार्रवाई करने में मदद करती है।

सुरक्षा की भावनाएँ व्यक्ति को संबल, सहायता, और आत्मविश्वास की प्राप्ति में मदद करती हैं, जो उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में सफल बनने में महत्वपूर्ण साबित होती हैं।

निष्कर्ष:

इस अवलोकन का परिणामस्वरूप, हम देखते हैं कि घरेलू और कामकाजी महिलाएँ अपने बच्चों में व्यक्तित्व, मूल्य, और सुरक्षा की महत्वपूर्ण भावनाएँ सिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। घरेलू महिलाएँ अपने बच्चों के व्यक्तिगत और सामाजिक विकास को महत्वपूर्ण ध्यान देती हैं। उनकी मातृता की भूमिका उन्हें बच्चों की प्रतिभा और रुचियों का समर्थन करने के लिए प्रेरित करती है, जिससे बच्चे आत्ममुखी और सशक्त व्यक्तित्व के साथ बढ़ सकें।

मूल्यों की भावनाएँ बच्चों को सही और गलत के बीच निर्णय लेने में मदद करती हैं और उन्हें सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती हैं। घरेलू मातृता के दौरान, माताएँ अपने बच्चों को आदर्शों और मूल्यों के महत्व को सिखाती हैं, जो उनके व्यक्तिगत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सुरक्षा की भावनाएँ बच्चों को आत्मनिर्भर और सुरक्षित महसूस करने में मदद करती हैं। ये भावनाएँ उन्हें समाज में सही दिशा में आगे बढ़ने के लिए साहस और आत्मविश्वास प्रदान करती हैं। इन सभी भावनाओं का पालन करने से घरेलू और कामकाजी महिलाएँ न केवल अपने बच्चों के व्यक्तिगत और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, बल्कि समाज में भी सामाजिक सुधार और समृद्धि के साथ सामंजस्यपूर्ण योगदान करती हैं।

संदर्भ

1. मूर, टी.डब्ल्यू. 1975। विशिष्ट प्रारंभिक मातृत्व और उसके विकल्प। मनोविज्ञान के स्कैंडिनेवियाई जर्नल, 16 पीपी 256 - 272।

2. पेलेग, ओ, हलाबी ई, व्हाबी ई.एन. 2006. मातृ अलगाव चिंता और स्वयं के भेदभाव का बच्चों की अलगाव चिंता और किंडरगार्टन में समायोजन से संबंध: ड्रुज़ परिवारों में एक अध्ययन। हाइफ़ा विश्वविद्यालय, इज़राइल। चिंता विकार 20 (2006) 973-995।

3. रामू, जी.एन. 1989. शहरी भारत में महिलाएं, काम और विवाह - दोहरे और एकल कमाने वाले जोड़ों का एक अध्ययन, नई दिल्ली - सेज प्रकाशन।

4. राणे, एस.ए. 1986. समाज में मनोवैज्ञानिक समस्याओं की जांच के उद्देश्य से ग्रेटर बॉम्बे में कामकाजी माताओं के आत्म सुधार कार्यक्रम की जांच। पीएच.डी., शिक्षा बॉम्बे विश्वविद्यालय।

5. रिबल । 1979. किशोरावस्था का मनोविज्ञान, एंगल वुड क्लिफ्स, प्रेंटिस हॉल।

6. सैंट्रोक जे.डब्ल्यू. 2004. बाल विकास मैकग्रा-हिल। पीपी 494-495

7. शर्मा, आर. 1986. कामकाजी और गैर-कामकाजी माताओं के बच्चों का तुलनात्मक अध्ययन। पीएचडी शिक्षा, एम. सुख विश्वविद्यालय।

8. सूफ़े एल.ए. 1993. भावनात्मक विकास: प्रारंभिक वर्षों में भावनात्मक जीवन का संगठन। न्यूयॉर्क: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी। प्रेस। पीपी 315-342

9. थॉम्पसन जी.जी. 1981. बाल मनोविज्ञान सुरजीत प्रकाशन कमला नगर दिल्ली। पी 630-640

10. वाल्ज़र, एस. 1996. "शिशु के बारे में सोचना: लिंग और शिशु देखभाल के विभाग"। सामाजिक समस्याएँ 43 (मई): 219 - 243.